पुस्तक समीक्षा

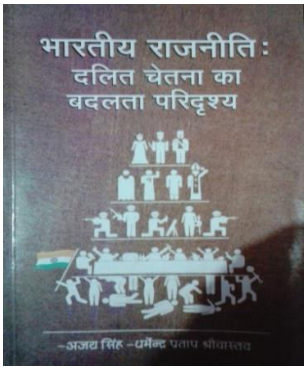

भारतीय राजनीति : दलित चेतना का बदलता परिदृश्य , संपादक अजय सिंह, धर्मेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, संजय प्लेस, आगरा, 2015, ISBN 978-93-81124-83-3 मूल्य रू0 180, पृष्ठ 262

अंतस और अध्यात्म भारतीय मनीषा की प्रमुख विशेषतायें रहीं हैं। अध्यात्म के माध्यम से अंतस की पवित्रता को ढूढ़ते हुए स्वयं को अविनाशी संसार में विनश्ट होने के पूर्व स्थापित करने की अभिलाषा, भारतीय मनीषा का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इच्छा मनुष्य रूप में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ जीव रूप को सार्थक करने का भी। इस रूप में मनुष्य मनुष्य में कोई भेद नहीं, सभी को अभीष्ट प्राप्ति की पूरी स्वतंत्रता और सभी के लिये विकास का समान वातावरण। काश! यह भारतीय समाज का स्थायी भाव रहा होता.....अति विशिष्ट भाव के साथ प्रारंभ यह पुस्तक भारतीय राजनीतिः दलित चेतना का बदलता परिदृश्य, भारतीय सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था पर विद्वतजनों द्वारा किये गये गहन मंथन व सेमिनार में प्रस्तुत उनके शोध पत्रों का संपादित रूप है। समीक्षा के लिये प्रस्तुत पुस्तक इस तथ्य को प्रतिस्थापित करती है कि ''भारतीय सभ्यता का अवसान 'आत्म बचाव के एक यंत्र के रूप में हुआ। यह मस्तिष्क से दूर होती चली गयी, इसकी रचना धर्मिता का प्रत्येक पतनशील सभ्यता की भांति क्षरण हुआ, यह जादुई रीति रिवाज और बन्द समाज संरचना में विकृत हो गयी। लोगों को जिन्दा रखने के लिये उन्हे बड़ा और छोटा बनाया गया। यह वह सभ्यता थी जो बाहर से सम्पूर्ण दिखते हुए भी अन्दर से खोखली थी।'' पुस्तक का सार इस तथ्य में निहित है कि '' .....पर समाज जड़वत नहीं होता, गतिशीलता और सामाजिक व्यवस्था में सहज परिवर्तन इसकी सहज प्रवृत्ति है। सदियों तक भारतीय समाज व राजनीति पर प्रभुत्व रखने वाला तथा श्रेष्ठता का दम्भ भरने वाला उच्च वर्ग सहमा, भयग्रस्त,निराश, शंकालु और अपराध बोध से पीड़ित है जबकि पीड़ित, शोषित और बहिस्कृत दलित अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद सत्ता प्राप्ति के साथ साथ उच्चतर सामाजिक राजनीतिक विकल्प देने के लिये तत्पर है।''

सम्पूर्ण पुस्तक 6 खण्डों में विभक्त है। जिसमें भारतीय समाज राजनीति के सन्दर्भ में दलित एवम् दलित विमर्श से संबंधित सामग्रियों का निष्पक्ष प्रस्तुतिकरण संभव हो सका है। एक ऐसे समय में जबकि यह धारण बलवती होने लगी है कि दलित सरोकार केवल दलित चिन्तकों में ही हो सकता है, प्रस्तुत पुस्तक में दलित संवेदना संवंधी चिंतन व मनन सुधि जनों के लिये उपादेय है। प्रथम खण्ड 'भारत में दलित चेतना : परिचयात्मक विवेचन ' में 5 शोध पत्र संकलित हैं। इस खण्ड में दलित व दलित चेतना की संकल्पना से संबंधित प्रस्तुति निःसंदेह विश्वस्तरीय है। द्वितीय खण्ड 'दलित चेतना व भारतीय राजनीति' पुस्तक का सबसे बड़ा खण्ड है जिसमें 13 शोध पत्रों का संकलन है। उस खण्ड में भारत में दलित चेतना की प्रक्रिया को ऐतिहासिक रूप में समझने का प्रयास सफल है। दलित चेतना के विकास पर दृष्टिपात हेतु यह खण्ड अत्यंत उपादेय है। पुस्तक का तृतीय खण्ड 'दलित चेतना में महापुरूषों का योगदान' इस प्रश्न के साथ प्रारंभ होता है कि कल तक राजनीतिक फलक से गायब दलित वर्ग आज बहुत कुछ राजनीतिक परिदृश्य का सृष्टा बन गया है आखिर यह हुआ कैसे? पुस्तक के इस खण्ड के 5 शोध पत्र इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करते हैं कि दलित चेतना कोई अचानक घटने वाली घटना नहीं वरन असंख्य महापुरूषों द्वारा किये गये योगदान का परिणाम है। चतुर्थ खण्ड के 6 शोध पत्र दलित चेतना के स्वरूप पर काकदृष्टि डालने में सफल हैं कि सामाजिक समरसता के मानक पर दलित चेतना का उभार सफल रहा है या नहीं।

दलित चिंतन व दलित चेतना से संवंधित विमर्श बगैर साहित्यिक सन्नद्धता के पूर्ण नहीं हो सकता। पुस्तक के पांचवें खण्ड 'हिन्दी साहित्य व दलित चिंतन' के 4 शोध पत्र प्रेमचन्द व निराला जैसे साहित्य साधकों में दलित संवेदना को रेखांकित करते प्रतीत होते हैं। पुस्तक का अंतिम खण्ड 'चिंतन के विविध सरोकार' समकालिक राजनीतिक परिदृश्य में दलित चेतना व स्वरूप पर संपादित 6 शोध पत्र भारत में दलित प्रतिरोध व दलित वर्ग की प्रस्थिति परिवर्तन पर आधृत है।

समग्र रूप में पुस्तक राजनीतिक समाजशास्त्रीय वांगमय के लिये अत्यंत श्रेयस्कर है। पुस्तक में विद्वानों ने दलित संदर्भ से संदर्भित जिस भी विंदु को छुआ है उसे पूर्ण गंभीरता के साथ विवेचित व विश्लेषित किया है। सुधी पाठकों, खासकर सामाजिक संरचना में रूचि रखने वालों के लिये पुस्तक की महत्ता असंदिग्ध है क्योंकि पुस्तक में दिये गये सन्दर्भ व पाद टिप्पणियां उनके ज्ञान संसार को विकसित करने में सहायक सिद्ध होंगी। विविध विद्वानों के शोध पत्रों के सम्पादन में संपादक की एक सीमा होती है तदपि जिस भाव व तारतम्यता के साथ संपादक द्वय ने पुस्तक का संपादन किया है कि पुस्तक आदि से अंत तक निरंतर एक प्रवाह धारण करती है। इस हेतु संपादक द्वय साधुवाद के पात्र हैं। अंततः आज जबकि इस प्रकार की पुस्तकों का मूल्य बहुत अधिक कर इन्हें केवल पुस्तकालयों में ही शोभायमान बना दिया जाता है पुस्तक के प्रकाशक अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा द्वारा मात्र रू0180 में पुस्तक की प्रस्तुति कर इसे हर सुधि पाठक तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया गया है।

कृष्ण कुमार सिंह, अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत